'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.625, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 200 : Contemporary Problems in India and Remidies
ISSN : 2348-7143
October-2019

प्रेमचन्द के उपन्यासों में विधवा नारी की समस्या

प्रा. डॉ. संगिता एकनाथराव आहेर
महिला महाविद्यालय, गेवराई
ता.जि.बीड.

सामाजिक समस्याओं का यथार्थ, वास्तव एवं कुशल चित्रण करनेवाले उपन्यासकारों में प्रेमचंद जी प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं | समाज के प्रति उनकी प्रतिबध्दता उन्हें सामाजिक समस्याओं पर लिखने के लिए बाध्य करती हैं | उनके उपन्यासों में भी प्रमुखतः सामाजिक समस्याओं को उजागर किया गया है | खुद इसे स्वीकारते हुए प्रेमचन्द जी लिखते हैं, "अब वह (साहित्य) केवल नायक-नायिका के संयोग-वियोग की कहानी नहीं सुनाता, किन्तु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और उन्हें हल करता है|"[१]

समाज के विभिन्न वर्गों में जो विषमताएँ हैं, उन्हें प्रेमचन्द की सूक्ष्म दृष्टि तुरन्त पहचान लेती है | इन विषमताओं को गहराई में जाकर उनकी आँखें ढूँढती हैं और उनकी गहरी परख भी वे रखते हैं | सामाजिक समस्याओं में अनेक कुरीतियों एवं विसंगतियों पर वे कड़ा प्रहार करते हैं | समाज में नारी की स्थिति दयनीय और शोचनीय है, इस उपेक्षित वर्ग के प्रति भी उन्हे गहरी सहानुभूति है| समाज का निम्न वर्ग, मजदूर, किसान के प्रति प्रगतिशील विचार एवं सहानुभूति रखते हैं, उसी प्रकार विधवा नारियों की समस्याओं को भी वे अपने उपन्यासों में उजागर करते है|

भारतीय समाज का अंधःविश्वास और गलत रूढ़िवादी परम्पराओं पर कठोर आघात प्रेमचंद जी करते हैं | विधवा नारी की दशा और समस्या को वे अपने उपन्यासों में केवल अभिव्यक्त ही नहीं करते बल्कि विधवा के प्रति अपने प्रगतिशील विचारों को भी व्यक्त करते हैं | "उन्हें विधवाओं के कर्तव्य, अधिकार, विवशता एवं समाज में उनके स्थान का पूर्ण ज्ञान है, जिसे उन्होंने अपने साहित्य में स्थान-स्थान पर प्रकट भी किया है |"[२]

गहनों की लालसा पर आधारित 'गबन' उपन्यास की रतन भी ऐसी विधवा है जो अपने पिता की उम्र के व्यक्ति इन्द्रभूषण वकील से ब्याही गयी थी | फिर भी उम्र के इस अन्तराल को अनदेखा करते हुए रतन अपने पति को पूर्ण सम्मान देती है| वार्धक्य के कारण पति की मृत्यू के बाद समाज के कपटपूर्ण व्यवहार को भी उसे सहना पड़ता है | प्रेमचन्द के समय विधवाओं को संपत्ति का अधिकार नहीं था इसलिए विधवाओं की दयनीय अवस्था थी |

रतन के पति वकीलसाहब के भतीजे मणिभूषण की घर बेचने की चाल को वह समझ जाती है तो कहती है, "मैं दया की भिखारिणी न बनूँगी | तुम इन चीजों के अधिकारी हो ले जाओ | मैं जरा भी बुरा नहीं मानती | दया की चीज न जबरदस्ती ली जा सकती है, न जबरदस्ती दी जा सकती है|"[३] संपत्ति में विधवा के अधिकार न होने के कारण असुरक्षा में ही इन्हें जीवन व्यति करना पडता है | रतन जानती है यह गलत कानून है, परन्तु रतन को कोई लालच भी नहीं | लेकिन इस सामाजिक विसंगति को देखकर धैर्यशील और संयमी रतन कड़ा प्रहार करती है, "न जाने किस पापी ने यह कानून बनाया था | अगर ईश्वर कही हैं और उसके यहाँ कोई न्याय होता है, तो एक दिन उसीके सामने उस पापी से पूछँगी, क्या तेरे घर में माँ-बहनें न थी? तुझे उनका अपमान करते लज्जा न आई? अगर मेरी जबान में इतनी ताकत होती कि सारे देश में उसकी आवाज पहुँचती, तो मैं सब स्त्रियों से कहती-बहनों! किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना और गर करना तो जब तक अपना घर अलग न बना लो, चैन की नींद मत सोना |"[४]

अनमेल विवाह की प्रमुख सामाजिक समस्या पर आधारित प्रेमचन्द का श्रेष्ठ उपन्यास 'निर्मला' की माता कल्याणी पर जब वैधव्य का पहाड़ टूट जाता है वह भी टूट जाती है | पति की मृत्यु के बाद उसकी बेटी निर्मला की सगाई टूट जाती है| सगाई टूटने पर वह अकेली, असहाय अबला का जीवन पथ करूण बन जाता है | उसे निर्मला की चिंता सताने लगती है| "दरिद्र विधवा के लिए इसे बड़ी और क्या विपत्ति हो सकती है कि जवान बेटी सिर पर सवार हो | लड़के

नंगे पाव पढ़ने जा सकते हैं, चौका बर्तन भी अपने हाथ से किया जा सकता है, रूखा-सूखा खाकर निर्वाह किया जा सकता है, झोपड़े में दिन काटे जा सकते हैं, लेकिन युवती कन्या घर में नहीं बैठायी जा सकती |"[५] समाज का स्त्रियों की और देखने के दृष्टिकोण के कारण मानों स्त्रियों का जीना ही दुभर हो जाता है | एक असहाय अबला अपनी जवान लड़की को घर में कैसे रखे और निर्वाह करें इसी उलझन में निर्मला का ब्याह बूढ़े से किया जाता है | अनमेल विवाह के दुष्परिणाम उसे न जीने देते है न मरने देते है | असहाय विधवा कल्याणी लड़की के ब्याह का उत्तरदायित्व जल्द से जल्द निभाना चाहती है, यह सोचकर की किसी पुरूष के हाथों में बेटी का भविष्य सुरक्षित है, भले ही वह पुरूष बेटी की पिता की उम्र का ही क्यो न हो! इस भयावह वास्तव सामाजिक समस्या को प्रेमचन्द जी मुखर करते है |

'कर्मभूमि' उपन्यास में तीन विधवा नारी पात्र हैं और तीनों की पीड़ा अलग-अलग है, परन्तु संघर्ष-रत जीवन तीनों के हिस्से में है | पठानिन इस उपन्यास की ऐसी विधवा नारी है जो वैधव्य और दारिद्र्य को साथ-साथ जीती और संघर्ष करती है | अपने मरे हुए पति के बारे में हमेश गर्व से बात करती है | पठानिन बहुत गरीब है परन्तु सहृदयी, विनम्र और सहनशील भी है | परन्तु उसकी गरीबी सामाजिक भावना के आडे नहीं आती | इसलिए वह सख्त और अक्खड़ भी है | अमर उसके घर में साडियाँ भेट देने के हेतु आता है तो वह अमर को सुनाते हुए कहती है, "होश में आ छोकरे! यह साड़ियाँ ले जा, अपनी बीवी-बहन को पहना, यहाँ तेरी साड़ियों के भूखे नहीं है |"[६] पठानिन में स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा हुआ है, इतनाही नहीं विधवा के रूप में जीते हुए समाज की हर भली-बुरी बात पहचानकर अपने आपको उसने स्थापित किया था | इसीलिए वह अमर को खरी-खोटी सुनाते हुए बता देती है कि उसकी गरीबी लाचार नहीं है, "हम गरीब है, मुसीबत के मारे हैं, रोटियों के मुहताज है| जानता है क्यो? इसलिए कि हमे आबरू प्यारी है | खबरदार जो कभी इधर का रूख किया | मुँह मे कालिख लगाकर चला जा |"[७]

सलोनी भी कर्मभूमि का एक ऐसा विधवा नारी पात्र है जो अपने दुःख-दर्द को कर्मयोग से बाँधता है | चार बीघा जमीन उसके हिस्से आयी है जो उसके परिवार का ही व्यक्ति करता है | सह विनोद भाव वाली सलोनी साहसी है और सामाजिकता भी उसमें बलवत्तर है | गाँव में पाठशाला के लिए जगह की बात चल रही थी तो अपने जीवन की पूँजी वह पाठशाला को देती है | इसमें उसे बड़ी खुशी होती है, "आज सलोनी जितनी खुश है, उतनी शायद और कभी न हुई हो | वही बुढ़िया जिसके द्वार पर कोई बैल बाँध देता, तो लड़ने को तैयार हो जाती, जो बच्चों को अपने द्वार पर गोलियाँ न खेलने देती, आज अपने पुरखों का घर देकर अपना जीवन सफल समझ रही है |"[८]

कर्मभूमि का तीसरा विधवा नारीपात्र एक धनाढ्य विधवा रेणूका देवी का है | जीविका निर्वाह की समस्या उसे नहीं है वैधव्य का दुःख वह अपनी संतुलित जीवन पद्धती से और विनोद भाव की प्रवृत्ति से चलाकर अपना शेष जीवन बीता रही है | उपन्यास की नायिका सुखदा उसकी बेटी है | वह बेटी सुखदा का जीवन सुखमय बनाना चाहती है | क्योंकि बेटी और दामाद की आपस में बनती नहीं है | रेणूका अपनी बेटी को जीवन की वास्तविकता और रिश्ते की अहमियत समझाती है, "प्रेम तो बिरले ही दिलो मे होता है| धर्म का निबाह तो करना ही चाहिए | पति हजार कोस पर बैठा हुआ स्त्री की बड़ाई कर | स्त्री हजार कोस पर बैठी हुई मियाँ की तारीफ करें | इससे क्या होता है |"[९]

रेणुका अपने धनसंचय का उचित इन्तजाम करना चाहती है | अपना धन वह जरूरतमन्द लोगो को देना चाहती है | इसीलिए अपना पैसा मन्दिरो में लगाने के बजाय किसी ट्रस्टी को देकर वह उसका उचित उपयोग करना चाहती है | "मन्दिर तो यों ही इतने हो रहे है कि पूजा करनेवाले नहीं मिलता शिक्षादान महादान है और वह भी उन लोगों मे, जिनका समाज ने हमेशा बहिष्कार किया हो |"[१०] रेणुका के पास पैसा बहुत है और उसके विचार भी परिपक्व और समाजाभिमुख है | इसलिए यह विधवा नारी अन्य विधवाओं की तरह जीने का संघर्ष नहीं करती परन्तु अपने जीने को सार्थक कराना चाहती है |

निष्कर्ष :

हम कह सकते है कि प्रेमचन्द के साहित्य में सामाजिक समस्याओं को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है | इन समस्याओं में विधवा नारी की समस्या को उन्होंने उजागर करते हुए उसे संपत्ति का अधिकार प्राप्त होना चाहिए इस बात को रेखांकित किया है | विधवाओं के सामने आर्थिक समस्या भयावह रूप में आती है | जिससे उसका जीवन अत्याधिक शोचनीय और दयनीय हो जाता है | रतन, कल्याणी, पठानिन, सलोनी यह विधवाएँ यह इसका प्रतिनिधित्व करती है |

संदर्भ सूची :

अ.क्र.	रचनाकार	रचना	पृ.सं.
१.	प्रेमचन्द	कुछ विचार	०८
२.	डॉ. भरतसिंह	प्रेमचन्द के नारी पात्र	९८
३.	प्रेमचन्द	गबन	२२०
४.	वही	वही	२२१
५.	वही	वही	३६
६.	वही	वही	८७
७.	वही	वही	८७
८.	वही	वही	११०
९.	वही	वही	१४८
१०.	वही	वही	१४९